शिव शिष्य परिवार

परिदृश्य :– शिव शिष्य संगोष्ठी (कैमूर)।
स्थान :– देवघर, मुख्यालय ।
दिनांक :– 12 जून 2010 (शनिवार)

शिव शिष्य परिवार की प्रेरणा एवं कैमूर के स्थानीय शिव शिष्य/शिष्याओं के सहयोग से शिव शिष्य संगोष्ठी का आयोजन देवघर (मुख्यालय) के परिसर में दिनांक 12 जून 2010 को किया गया।

इस संगोष्ठी में आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं आशीर्वचनों हेतु इस कालखण्ड के प्रथम शिव शिष्य वरेण्य गुरुभ्राता साहब श्री हरीन्द्रानन्द जी को सादर आमंत्रण श्री अभिनव आनन्द, सचिव शिव शिष्य परिवार द्वारा भेजा गया। वरेण्य गुरुभ्राता ने उसे स्वीकार करने की कृपा की।

संगोष्ठी में भाग लेने आये स्थानीय एवं कैमूर जिला से आये सक्रिय शिव शिष्य/शिष्याओं को सम्बोधित करते हुए वरेण्य गुरुभ्राता ने बताया कि शिव परम गुरु हैं, वे जगत गुरु हैं। शिव को अपना गुरु बनाइये। इसके लिए मात्र तीन सूत्रों का पालन करना होता है, वह है – गुरु से दया मांगना, शिव गुरु की चर्चा करना एवं शिव गुरु को प्रणाम करना। शिव गुरु की शिष्यता से ही मानव का कल्याण सम्भव है।

संगोष्ठी में शिव शिष्य परिवार के सचिव, श्री अभिनव आनन्द ने अपने विचार रखे।

भक्तिपूरित वातावरण में संगोष्ठी का समापन हुआ।

शिव शिष्य परिवार

परिदृश्य :– शिव शिष्य संगोष्ठी (गढ़वा, डालटेनगंज एवं लातेहार)।
स्थान :– देवघर, मुख्यालय ।
दिनांक :– 13 जून 2010 (रविवार)

शिव शिष्य परिवार की प्रेरणा एवं स्थानीय लोगों के सहयोग से देवघर मुख्यालय परिसर में गढ़वा, डालटेनगंज एवं लातेहार जिले की संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 13 जून 2010 को किया गया।

शिव शिष्य परिवार के उपाध्यक्ष, प्रो0 रामेश्वर मंडल ने वरेण्य गुरुभ्राता **श्री हरीन्द्रानन्द जी** को सादर आमंत्रित किया। वरेण्य गुरुभ्राता ने अपनी सौम्य उपस्थिति की कृपा की।

वरेण्य गुरुभ्राता ने इस संगोष्ठी के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए बतलाया कि ‘शिव जन जन के गुरु हैं’ इस बात को आम आदमी तक पहुँचाने के उद्देश्य से ही इस संगोष्ठी का आयोजन किया गया है। शिव शिष्य परिवार की मान्यता है कि मनुष्य मात्र का कल्याण शिव को अपना गुरु बना कर ही सम्भव है।

प्रो0 रामेश्वर मंडल ने संबधित जिलों में शिव कार्य को तेज करने के लिए आये तमाम गुरुभाई/बहनों को आशीर्वचनों से अप्लावित कर शिव शिष्यता पर बल दिया तथा शिवकार्य को जीवन का आधार बनाने की बात कही।

शिव शिष्य परिवार के सचिव श्री अभिनव आनन्द ने अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हम शिव शिष्यों का लौकिक उद्देश्य होना चाहिए कि विश्व के प्रत्येक व्यक्ति का जुड़ाव शिव के गुरू स्वरूप से हो तभी मानव कल्याण के साथ–साथ साहब एवं दीदी के संकल्प की सार्थकता सिद्ध हो सकेगी।

आगतों का स्वागत श्री अनिरूद्ध सिंह, क्षेत्रीय शिव कार्य संयोजक, लातेहार एवं आभार श्री सुखदेव सिंह, प्रक्षेत्रीय संयोजक, पलामू ने किया।

शिव शिष्य परिवार

परिदृश्य :– शिव शिष्य संगोष्ठी (मिर्जापुर)।
स्थान :– देवघर, मुख्यालय ।
दिनांक :– 19 जून 2010 (शनिवार)

शिव शिष्य परिवार की प्रेरणा एवं मिर्जापुर के स्थानीय शिव शिष्य/शिष्याओं के सहयोग से शिव शिष्य संगोष्ठी का आयोजन देवघर (मुख्यालय) के परिसर में दिनांक 19 जून 2010 को किया गया।

संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रुप में पधारने हेतु इस कालखण्ड के प्रथम शिव शिष्य एवं तीन सूत्रों के प्रदाता साहब श्री हरीन्द्रानन्द जी को सादर निमंत्रण श्री अभिनव आनन्द, सचिव, शिव शिष्य परिवार द्वारा भेजा गया, जिस पर उन्होंने कृपापूर्वक अपनी स्वीकृति प्रदान की।

इस संगोष्ठी में मिर्जापुर जिले के विभिन्न क्षेत्रों से आये सैकड़ों शिव शिष्य/शिष्याओं को संबोधित करते हुए वरेण्य गुरुभ्राता ने कहा कि शिव को गुरु होने से सारे लौकिक–पारलौकिक मनोरथ स्वतः पूर्ण होते हैं। शिव तो गुरुओं के गुरु हैं। उनकी शिष्यता ग्रहण करने की स्वतंत्रता प्रत्येक मनुष्य को है। उन्होंने सभी धर्म, सम्प्रदाय, जाति, वर्ण एवं वर्ग के लोगों को शिव का शिष्य होने के लिए अह्वान किया।

अध्यक्ष, शिव शिष्य परिवार ने अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर कहा कि शिव शिष्यता ही एक मात्र विकल्प है। साहब द्वारा प्रदत्त सूत्रत्रय का अनुपालन कर अपने जीवन को सुखी, समृद्ध, सबल एवं सामर्थ्यवान बनायें। यह परीक्षित एवं अनुभूत सत्य है।

मंच संचालन श्री रामाशंकर ने किया। श्री मंगल सिंह, प्रक्षेत्रीय शिव कार्य संयोजक, मिर्जापुर ने आगत अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन करने के बाद आयोजन की समाप्ति की घोषणा की।

शिव शिष्य परिवार

परिदृश्य :– शिव गुरू महोत्सव।
स्थान :– नोयडा, उत्तर प्रदेश ।
दिनांक :– 21 जून 2010 (सोमवार)

शिव शिष्य परिवार की प्रेरणा एवं स्थानीय लोगों के सहयोग से नोयडा, उत्तर प्रदेश में दिनांक 21 जून 2010 को शिव गुरू महोत्सव का आयोजन किया गया।

इस आयोजन में मुख्य अतिथि के रुप में पधारने हेतु शिव शिष्य परिवार के अध्यक्ष, श्री देवाशीष प्र0 सिंह द्वारा वरेण्य गुरुभ्राता को सादर अनुरोध किया गया। वरेण्य गुरुभ्राता ने इस अनुरोध को स्वीकार करने की कृपा की ।

महोत्सव को सम्बोधित करते हुए वरेण्य गुरुभ्राता साहब श्री हरीन्द्रानंद जी ने कहा कि शिव जगत गुरु हैं। आदिकाल से वे आदिगुरु एवं गुरु पद पर आसीन हैं। उनके विभिन्न स्वरुपों से जनमानस परिचित है किन्तु उनके ज्ञानदाता स्वरुप की जनमानस में व्याप्ति नहीं है। मानव मात्र के लौकिक – पारलौकिक कल्याण हेतु प्रत्येक व्यक्ति को शिव की शिष्यता ग्रहण करना आज के परिवेश में एक मात्र विकल्प है।

महोत्सव के उद्धेश्य पर श्री देवाशीष प्र0 सिंह, अध्यक्ष, शिव शिष्य परिवार, प्रो0 रामेश्वर मंडल, उपाध्यक्ष, शिव शिष्य परिवार एवं प्रक्षेत्रीय संयोजक श्री जवाहर, ने शिव शिष्यता एवं शिव गुरु से सम्बंधित विभिन्न विन्दुओं पर अपने विचार रखे।

आगतों का स्वागत एवं आभार स्थानीय आयोजकगण के द्वारा किया गया।

शिव शिष्य परिवार

परिदृश्य :- शिव शिष्य/शिष्याओं की बैठक।
स्थान :- द्वारिका, नई दिल्ली ।
दिनांक :- 22 जून 2010 (मंगलवार)

शिव शिष्य परिवार, द्वारिका, (नई दिल्ली) के तत्वावधान में स्थानीय गुरु भाई/बहनों द्वारा आयोजित शिव शिष्य/शिष्याओं की बैटक में उपस्थित होने हेतु शिव शिष्य परिवार के अध्यक्ष, श्री देवाशीष प्र0 सिंह ने इस कालखण्ड के प्रथम शिव शिष्य एवं शिव शिष्यता के उद्‌घोषक **वरेण्य गुरुभ्राता श्री हरीन्द्रानन्द जी** को सादर आमंत्रित किया। जिसपर उन्होंने सहमति प्रकट की एवं उपस्थित होने की कृपा प्रदान की।

वरेण्य गुरुभ्राता साहब श्री हरीन्द्रानन्द जी ने बैठक को सम्बोधित करते हुए कहा कि शिव को गुरु मानने से ही मनुष्य का जीवन सार्थक हो सकता है। मात्र मन इस अवस्था में रहे कि शिव हमारे गुरु हैं और मैं उनका शिष्य हूँ। उन्होंने अपने शिष्य जीवन में प्राप्त अनुभूतियों के आधार पर प्राप्त तीन सूत्रों को व्यवहार में लाने का अह्वान किया। वरेण्य गुरुभ्राता ने बताया कि दूसरों के साथ शिवगुरु की चर्चा के क्रम में व्यक्ति का मन शिवगुरु से जुड़ाव की दिशा में चल पड़ता है और शिवगुरु के नाम की बार – बार आवृति से व्यक्ति का मन मानने लगता है कि शिव मेरे गुरु हैं और मैं उनका शिष्य हूँ।

श्री देवाशीष प्र० सिंह, अध्यक्ष, शिव शिष्य परिवार, ने कहा कि आज का मनुष्य प्रबल जागतिक सुखों की ओर उन्मुख है लेकिन सुख की प्राप्ति नहीं हो पाती, इसका मूल कारण उसकी अज्ञानता है। अतएव ज्ञान प्राप्ति हेतु व्यक्ति को गुरु का आश्रय लेना पड़ेगा।

शिव शिष्य परिवार के उपाध्यक्ष, प्रो0 रामेश्वर मंडल ने कहा कि शिव गुरु हैं उनको गुरु मानकर व्यक्ति अपने सभी लौकिक – पारलौकिक मनोरथ स्वतः प्राप्त कर सकता है। उन्होंने स्वयं का उदाहरण देते हुए कहा कि मैंने शिव को गुरु मानकर वरेण्य गुरुभ्राता द्वारा बताए तीन सूत्रों का अनुपालन किया है और पाया भी है। श्री छोटेलाल पासवान, दिल्ली ने जनमानस को आह्वान किया कि आप भी शिव को गुरु बनाएं। आज के परिवेश में शिव गुरु ही एक मात्र विकल्प हैं।

आयोजन में लगभग 2 हजार की संख्या में लोग उपस्थित थे। आगतों का स्वागत एवं आभार व्यक्त श्री जवाहर, प्रक्षेत्रीय शिव कार्य संयोजक, नई दिल्ली द्वारा किया गया।

शिव शिष्य परिवार

परिदृश्य :– शिव शिष्य संगोष्ठी (मधुबनी)।
स्थान :– देवघर, मुख्यालय ।
दिनांक :– 25 जून 2010 (शुक्रवार)

शिव शिष्य परिवार की प्रेरणा एवं मधुबनी के लोगों के सहयोग से देवघर (मुख्यालय) के परिसर में एक दिवसीय शिव शिष्य संगोष्ठी आयोजित हुई।

इस आयोजन में मुख्य अतिथि के रुप में पधारने हेतु शिव शिष्य परिवार के अध्यक्ष, श्री देवाशीष प्रसाद सिंह द्वारा वरेण्य गुरुभ्राता को सादर अनुरोध किया गया। वरेण्य गुरुभ्राता ने इस अनुरोध को स्वीकार करने की कृपा की।

शिव शिष्य संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए वरेण्य गुरुभ्राता ने कहा कि शिव जगत गुरु हैं। आदिकाल से वे आदिगुरु एवं गुरु पद पर आसीन हैं। उनके विभिन्न स्वरुपों से जनमानस परिचित है किन्तु उनके ज्ञानदाता स्वरुप की जनमानस में व्याप्ति नहीं है। मानव मात्र के लौकिक – पारलौकिक कल्याण हेतु प्रत्येक व्यक्ति को शिव की शिष्यता ग्रहण करना आज के परिवेश में एक मात्र विकल्प है।

संगोष्ठी के उद्धेश्य पर श्री देवाशीष प्र० सिंह, अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष प्रो० रामेश्वर मंडल शिव शिष्य परिवार ने प्रकाश डाला। श्री अभिनव आनन्द सचिव, शिव शिष्य परिवार ने शिव शिष्यता एवं शिव गुरु से सम्बंधित विभिन्न विन्दुओं पर अपने विचार रखे। आगतों के स्वागत एवं आभार श्री भरत प्रसाद गुप्ता, प्रक्षेत्रीय शिव कार्य संयोजक, मधुबनी द्वारा किया गया।

शिव शिष्य परिवार

परिदृश्य :– शिव शिष्य संगोष्ठी (वर्द्धमान)।
स्थान :– देवघर, मुख्यालय ।
दिनांक :– 26 जून 2010 (शनिवार)

शिव शिष्य परिवार, के तत्वावधान में वर्द्धमान के लोगों के सहयोग से शिव शिष्य संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 26 जून 2010 को देवघर (मुख्यालय) के परिसर में किया गया।

संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रुप में पधारने हेतु इस कालखण्ड के प्रथम शिव शिष्य एवं तीन सूत्रों के प्रदाता साहब श्री हरीन्द्रानन्द जी को सादर निमंत्रण श्री अभिनव आनन्द, सचिव, शिव शिष्य परिवार द्वारा भेजा गया, जिस पर उन्होंने कृपापूर्वक अपनी स्वीकृति प्रदान की।

इस संगोष्ठी में जिले के विभिन्न क्षेत्रों से आये सैकड़ों शिव शिष्य/शिष्याओं को संबोधित करते हुए वरेण्य गुरुभ्राता ने कहा कि शिव को गुरु मानने से सारे लौकिक पारलौकिक मनोरथ स्वतः पूर्ण होते हैं। शिव तो गुरुओं के गुरु हैं। उनकी शिष्यता ग्रहण करने की स्वतंत्रता प्रत्येक मनुष्य को है। उन्होंने सभी धर्म, सम्प्रदाय, जाति, वर्ण एवं वर्ग के लोगों को शिव का शिष्य होने के लिए अह्वान किया।

श्री देवाशीष प्र० सिंह, अध्यक्ष, शिव शिष्य परिवार ने संगोष्ठी के मुख्य उद्धेश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि व्यक्ति अपना गुरू शिव को ही माने। जागतिक सुख–सुविधा गुरू बनाने से उपलब्ध होते हैं। श्री अभिनव आनन्द, सचिव ने आगत गुरू भाई/बहनों को शिव से नजदीक होने के लिए तीन सूत्रों को अपनाने की बात कही।

मंच संचालन श्री रामाशंकर सिंह ने तथा आगतों का स्वागत एवं आभार श्री सुशील बनर्जी ने किया।

शिव शिष्य परिवार

परिदृश्य :– शिव शिष्य संगोष्ठी (नवादा)।
स्थान :– देवघर, मुख्यालय ।
दिनांक :– 27 जून 2010 (रविवार)

शिव शिष्य परिवार की प्रेरणा एवं नवादा के लोगों के सहयोग से दिनांक 27 जून 2010 देवघर (मुख्यालय) के परिसर में शिव शिष्य संगोष्ठी आयोजित हुई।

इस आयोजन में मुख्य अतिथि के रुप में पधारने हेतु सचिव, शिव शिष्य परिवार श्री अभिनव आनन्द द्वारा वरेण्य गुरुभ्राता को सादर अनुरोध किया गया। वरेण्य गुरुभ्राता ने इस अनुरोध को स्वीकार करने की कृपा की।

श्री हरीन्द्रानन्द जी ने संगोष्ठी में अध्यात्म, मन, आत्मा के विज्ञान आदि पर चर्चा करते हुए कहा कि अध्यात्म आत्मा का विज्ञान है। आत्मा

परमात्मा को कहते है। आत्मा का विज्ञान ईश्वर का विज्ञान है। ईस्लाम में कहा गया है तु है तो खुदा है। हमारे यहाँ कहा जाता है ‘यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे’। दोनों का मतलब एक ही है। इसी खुदा के विज्ञान को अध्यात्म कहा जाता है। अर्थात् आत्मविज्ञान को अध्यात्म कहते हैं। उन्होंने कहा कि मन विचार पैदा करने की एक अदृश्य मशीन है। जब आप शिव को गुरू मानते हैं तो आपके मन में यह विचार पैदा होता है कि आप शिव के शिष्य हैं। यही विचार घनीभूत होकर भाव में परिणत होता है। प्रत्येक संबंध भाव के धरातल पर ही बनते हैं जैसे पिता–पुत्र का भाव, भाई–बहन का भाव, गुरू–शिष्य का भाव सभी भाव एक होते है।

श्री अभिनव आनन्द, सचिव, शिव शिष्य परिवार ने कहा कि जब शिव शिष्यता ग्रहण करते हैं तो शिव चर्चा से भाव जब प्रगाढ़ होता है तो प्रेम का रूप लेता है और प्रेम में दो भिन्न सत्ताएं एकमेक हो जाती हैं। अर्थात् गुरू और शिष्य के मध्य कोई फासला नहीं रह जाता है। सचिव, शिव शिष्य परिवार ने संगोष्ठी में उपस्थित लोगों को अपने शिष्य जीवन में प्राप्त अनुभूतियों से अवगत कराया।

संगोष्ठी में सैकड़ों लोगो ने चर्चा सुनी। आगतों का स्वागत एवं धन्यवाद ज्ञापन श्री मनोज कुमार ‘मंटू’ नवादा ने किया। मंच संचालन श्री रामाशंकर, देवघर ने किया।

शिव शिष्य परिवार

परिदृश्य :- शिव शिष्य संगोष्ठी (सिवान)।
स्थान :- देवघर, मुख्यालय ।
दिनांक :- 28 जून 2010 (सोमवार)

शिव शिष्य परिवार की प्रेरणा एवं सिवान के स्थानीय शिव शिष्य/शिष्याओं के सहयोग से शिव शिष्य संगोष्ठी का आयोजन देवघर, (मुख्यालय) परिसर में दिनांक 28 जून 2010 को किया गया।

संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रुप में पधारने हेतु इस कालखण्ड के प्रथम शिव शिष्य एवं तीन सूत्रों के प्रदाता साहब श्री हरीन्द्रानन्द जी को सादर निमंत्रण श्री अभिनव आनन्द, सचिव, शिव शिष्य परिवार द्वारा भेजा गया, जिस पर उन्होंने कृपापूर्वक अपनी सहमति प्रदान की।

इस संगोष्ठी में सिवान के विभिन्न क्षेत्रों से आये सैकड़ों शिव शिष्य/शिष्याओं को संबोधित करते हुए वरेण्य गुरुभ्राता ने कहा कि शिव को गुरु बनाने से सारे लौकिक पारलौकिक मनोरथ स्वतः पूर्ण होते हैं। शिव तो गुरुओं के गुरु हैं। उनकी शिष्यता ग्रहण करने की स्वतंत्रता प्रत्येक मनुष्य को है। उन्होंने सभी धर्म, सम्प्रदाय, जाति, वर्ण एवं वर्ग के लोगों को शिव का शिष्य होने के लिए आह्वान किया।

श्री देवाशीष प्र0 सिंह, अध्यक्ष, शिव शिष्य परिवार ने शिव की शिष्यता एक मात्र विकल्प पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मानव जीवन में गुरु की आवश्यकता ही नहीं बल्कि अनिवार्यता है। बिना गुरु के पूजा भी बेकार है। इसी आवश्यकता एवं अनिवार्यता का नाम अध्यात्म है।

श्री अभिनव आनन्द, सचिव, शिव शिष्य परिवार ने आगत गुरू भाई/बहनों को चर्चा से अप्लावित करते हुए विश्व गुरू शिव को अपना गुरू बनाने की बात कहा।

आगतों का स्वागत एवं आभार श्री उदय सिंह, प्रक्षेत्रीय शिव कार्य संयोजक सिवान एवं मंच संचालन श्री रामाशंकर जी ने किया।